

डॉ. रॉबर्ट यारब्रॉ, पास्टोरल एपिस्टल्स, सत्र 7, 1 तीमुथियुस 6

© 2024 रॉबर्ट यारब्रॉ और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट डब्ल्यू. यारब्रॉ हैं, जो देहाती धर्मपत्रों, देहाती नेताओं और उनके अनुयायियों के लिए अपोस्टोलिक निर्देश, सत्र 7, 1 टिमोथी 6 पर अपने शिक्षण में हैं।

हम देहाती पत्रों के अपने अध्ययन को जारी रखते हैं और हमारे अध्ययन का शीर्षक देहाती पत्रों, देहाती नेताओं और उनके अनुयायियों के लिए प्रेरितिक निर्देश है। और हमारे व्याख्यान के इस खंड में, हम 1 तीमुथियुस के साथ काम कर रहे हैं और हमने 1 तीमुथियुस के परिचय और पहले पांच अध्यायों के बारे में बात की है।

और इस खंड में, हम 1 टिमोथी पर अपना नज़र डालना चाहते हैं। जब हम अध्याय छह को देखते हैं और किताब पर नज़र डालते हैं तो मैं बहुत जागरूक हूँ कि हम कितना कुछ छोड़ रहे हैं, 1 टिमोथी के माध्यम से हमारा मार्ग कितना उथला है। परमेश्वर के वचन के किसी भी भाग में इतना अधिक है कि आप उस पर उपदेश या व्याख्यान देकर उसे समाप्त नहीं कर सकते।

और मुझे लगता है कि यह अच्छी बात है। यह स्वयं ईश्वर की परिपूर्णता और समृद्धि की ओर इशारा करता है। लेकिन हम उस समय में जो कर सकते हैं वह करेंगे जब हमें अध्याय छह को पूरा करना होगा और फिर समय मिलने पर हम पीछे मुड़कर देखेंगे और 1 तीमुथियुस की पुस्तक की थोड़ी सी समीक्षा करेंगे।

1 तीमुथियुस 6 इन शब्दों से आरम्भ करता है, जितने दास दासता के अधीन हैं, उन्हें अपने स्वामियों को पूर्ण आदर के योग्य समझना चाहिए, जिससे परमेश्वर के नाम और हमारी शिक्षा की निन्दा न हो। अब मैं चाहता हूँ कि आप याद रखें कि 1 तीमुथियुस अध्याय पांच की शुरुआत में हम लोगों के उपसमूहों के साथ काम कर रहे हैं। हम वृद्ध पुरुषों और वृद्ध महिलाओं और युवा पुरुषों और युवा महिलाओं के साथ काम कर रहे हैं।

हम विधवाओं से निपट रहे हैं। हम बड़ों के साथ काम कर रहे हैं। यह टिमोथी के लिए व्यावहारिक निर्देश का एक मिश्रण है कि उसे चर्च में मौजूद विभिन्न जनसांख्यिकी से कैसे निपटना चाहिए।

याद रखें कि बाइबल लिखे जाने के एक हजार साल बाद तक बाइबल में अध्याय विभाजन नहीं डाले गए थे। इसलिए कभी-कभी अध्याय विभाजन प्रवचन प्रवाह को समझने के विरुद्ध काम करते हैं। और यहां प्रवचन का प्रवाह अध्याय पांच में वापस चला जाता है।

अध्याय छह पॉल द्वारा शुरू किए गए नए विषय की तरह नहीं है। यह उस अंश का हिस्सा है जिसके बारे में वह बात कर रहे हैं कि कैसे सुसमाचार सभा में सामाजिक संबंधों और लोगों के विभिन्न संबंधों और सभाओं में विभिन्न लोगों के प्रति चर्च की जिम्मेदारी में क्रांतिकारी बदलाव

लाता है। लेकिन यहां हम चर्च में उन लोगों से निपट रहे हैं जिन्हें वह गुलामी के जुए के तहत बुलाता है।

श्लोक दो, जिनके पास विश्वास करने वाले स्वामी हैं, क्योंकि यदि चर्च में दास हैं तो वे संभवतः चर्च में स्वामी भी हैं। वह उन दोनों को संबोधित कर रहा है, और केवल इसलिए कि वे साथी विश्वासी हैं, उन्हें उनका अनादर नहीं करना चाहिए। इसके बजाय, उन्हें उनकी और भी बेहतर सेवा करनी चाहिए क्योंकि उनके स्वामी उन्हें साथी विश्वासियों के रूप में प्रिय हैं और अपने दासों के कल्याण के लिए समर्पित हैं।

ये वो चीज़ें हैं जिन पर तुम्हें शिक्षा देनी है और इन पर ज़ोर देना है। यहां याद रखें कि पीला भाग देवता का संदर्भ है, भगवान का संदर्भ है, और लाल भाग अनिवार्यताओं का संदर्भ है, आदेश जो हमें याद दिलाते हैं कि तीमुथियुस या हम पाठकों को, जैसा कि हम इसे पढ़ते हैं, उन्हें कैसे याद दिलाना चाहिए, ये शब्द व्यावहारिक जीवन को निर्देशित करने के लिए होते हैं। उनका उद्देश्य विनियोजन करना और उन्हें व्यवहार में लाना है।

अंतिम पंक्ति को अलग कर दिया गया है, और इसी तरह एनआईवी इसे पाठ में अलग करता है क्योंकि यह एक प्रकार का संक्रमणकालीन छंद है। मुझे लगता है कि यह उन सभी बातों पर नज़र डालता है जो वह अध्याय पाँच में कहते रहे हैं, लेकिन मैं इसे फिर से नीचे सूचीबद्ध करने जा रहा हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि यह आगे की बातों का शीर्षक भी है। यहां किया जाने वाला मुख्य अवलोकन 1 टिमोथी के इस भाग के कमरे में स्पष्ट हाथी से संबंधित है, और यह गुलामी का मुद्दा है।

और मैं यह कहना चाहता हूँ कि इस मुद्दे को संबोधित करते हुए, मैथ्यू 9 में पॉल यीशु से अधिक गुलामी का समर्थन नहीं कर रहा है। पॉल मैथ्यू 9 में कहता है जब वह तलाक को संबोधित करता है, कि वह तलाक का समर्थन नहीं कर रहा है। वह उस दुनिया की वास्तविकता से निपट रहा है जिसमें वह आया था, और जिसकी पीड़ा भगवान ने अपने लोगों को यह रियायत देकर कम कर दी थी। उन्होंने कहा, ठीक है, तुम्हारे हृदय की कठोरता के कारण मैं तुम्हें तलाक के विषय में ये निर्देश देने जा रहा हूँ।

जैसा कि मैंने पाठ में उल्लेख किया है, प्राचीन दुनिया में गुलामी एक सर्वव्यापी सामाजिक वास्तविकता थी। दुनिया भर में, विजित और विजेता थे, और हर कोई जिसके पास गुलाम हो सकता था उसके पास गुलाम थे। यह इसे सही नहीं बनाता है।

लेकिन गुलामी कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो ईश्वर की बनाई दुनिया का हिस्सा हो। उसने दुनिया नहीं बनाई और गुलामी नहीं बनाई और फिर कहा, अच्छा, यह बहुत अच्छा है। गुलामी एक ऐसी चीज़ है जो मनुष्य के पतन के बाद दुनिया में आई।

और जबकि चर्च को सदियों से गुलामी में फंसाया गया है, विशेष रूप से उत्तरी अमेरिका में, और यह दुखद था, यह केवल ईसाई धर्म में चर्च है कि हमारे पास गुलामी को समाप्त करने के लिए एक सामाजिक और राजनीतिक इच्छाशक्ति का उदय है। रोमन विश्व के विद्वान आम तौर पर इस बात से सहमत हैं कि यह ईसाई समुदाय का उदय था जिसने धीरे-धीरे रोमन साम्राज्य में

दासता को समाप्त कर दिया। और निश्चित रूप से, आधुनिक दुनिया में, विलियम विल्बरफोर्स और ब्रिटिश संसद से शुरू होकर जब ब्रिटेन ने समुद्र पर शासन किया था, और यह दुनिया में मुख्य औपनिवेशिक शक्ति थी, यह ब्रिटिश साम्राज्य था जिसने गुलामी को खत्म करना शुरू किया था।

यह एक बड़ी ईसाई उपस्थिति भी थी जिसने गृहयुद्ध को जन्म देने में मदद की। अमेरिकी सैन्य इतिहास में जीवन की सबसे बड़ी हानि एक युद्ध था, और लोग विभिन्न कारणों से कहेंगे, लेकिन निश्चित रूप से प्रमुख मुद्दों में से एक और प्रमुख प्रभावों में से एक गुलामी के उन्मूलन से संबंधित था। और, दुनिया भर में नस्लों के प्रति सम्मान एक समस्या बनी हुई है।

यह किसी विशेष देश के लिए अद्वितीय नहीं है, और आप दुनिया में कहीं भी जाएं, आप पाएंगे कि वहां की आबादी एक-दूसरे के साथ युद्धरत है। हम अमेरिकी अंग्रेजी में कहते हैं, वे एक-दूसरे की हिम्मत से नफरत करते हैं। और मेरे पास है, यह अंतरराष्ट्रीय यात्रा की सिर्फ एक विशेषता है, आप वहां पहुंचते हैं, आप यात्रा करते हैं और आप लोगों को जानते हैं, आपको पता चलता है कि सदियों पुराने दुश्मन कौन हैं।

इसलिए, मैं अमेरिका को बरी करने की कोशिश नहीं कर रहा हूं क्योंकि इसका गुलामी का इतिहास है, लेकिन इसने गुलामी को खत्म कर दिया है, और यदि आप चारों ओर देखें, ऑनलाइन जाएं, इसकी जांच करें, तो आप पाएंगे कि वहां 40 से 60 मिलियन के बीच गुलाम हैं। अभी। और इसमें से कुछ भी चर्च का प्रभाव नहीं है। यह अन्य धर्म हैं, यह तथाकथित ईसाई पश्चिम के बाहर दुनिया के अन्य हिस्से हैं, जहां गुलामी अब तक सबसे अधिक प्रचलित है।

मैं आपका ध्यान जीके बीले की कुलुस्सियों और फिलेमोन पर एक टिप्पणी में परिशिष्ट के एक खंड की ओर आकर्षित करना चाहता हूं, और मैं उसे यहां उद्धृत करने जा रहा हूं। पहली सदी की ग्रीको-रोमन गुलामी की तुलना अमेरिका में पुरानी दक्षिण 19वीं सदी की गुलामी से करना महत्वपूर्ण है और वह यहां एंकर बाइबिल डिक्शनरी में स्कॉट बारची के काम का हवाला दे रहे हैं, या स्कॉट बारची ने इस पर बहुत काम किया है। रोमन दुनिया में गुलामी की संस्था. तो, कुछ बिंदु.

नंबर एक, रोमन दुनिया में आबादी के एक बड़े हिस्से के बीच गुलामी बहुत अधिक आम थी। नंबर दो, संस्कृति और अर्थव्यवस्था गुलामी पर निर्भर हो गई। यदि दास प्रथा समाप्त कर दी गई होती, तो अचानक रोमन दुनिया में बड़े पैमाने पर भुखमरी पैदा हो जाती।

क्योंकि आधुनिक दुनिया के लिए आंतरिक दहन इंजन क्या है, या आधुनिक दुनिया के लिए आपूर्ति श्रृंखला क्या है, गुलामी प्राचीन दुनिया में थी। इस तरह से बहुत सी चीजें पूरी हुईं जिन पर लोग निर्भर थे, हर कोई अपनी दैनिक आजीविका के लिए निर्भर था। तीसरा, ग्रीको-रोमन दुनिया में गुलामी केवल एक जातीय जाति तक ही सीमित नहीं थी।

चौथा, अपराध के कारण गुलाम बनाए गए लोगों को छोड़कर अधिकांश दासों को आमतौर पर अपेक्षाकृत कम उम्र में, आमतौर पर 30 वर्ष की आयु के आसपास मुक्त कर दिया जाता था। यदि

आप गुलाम थे, तो आपके पास मुक्त होने का अवसर था। यह वफादार दास कार्य के लिए एक प्रेरणा बन गया क्योंकि इस तरह के कार्य को अंततः मुक्ति का पुरस्कार मिला।

नंबर पांच, गुलामी में रहने वाले व्यक्ति की स्थितियां अक्सर गुलामी से मुक्त हुए लोगों की स्थितियों से बेहतर होती थीं। नंबर छह, बड़ी संख्या में लोग अक्सर अपने आर्थिक और सामाजिक कल्याण को बेहतर बनाने के लिए स्वेच्छा से गुलामी में प्रवेश करते थे, जिसमें कभी-कभी उनके ऋणों का भुगतान भी शामिल होता था। सात, शिक्षा को प्रोत्साहित किया गया और दासों ने महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक कार्य किये।

आठ, दास संपत्ति के मालिक हो सकते थे, और वे अन्य दासों के भी मालिक हो सकते थे। और नौ, दासों की सार्वजनिक सभा को कानून द्वारा प्रतिबंधित नहीं किया गया था, जैसा कि अमेरिकी दक्षिण में था। तो फिर, इसका मतलब यह नहीं है कि गुलामी भगवान द्वारा निर्धारित की गई थी, या बाइबिल गुलामी का समर्थन करती है, लेकिन एक पुराने विद्वान के रूप में जो अब भगवान के साथ है, एफएफ ब्रूस ने पॉल पर अपनी पुस्तक के अंत में कहा, पॉल को प्रेरित कहा जाता है हार्ट सेट फ्री, उन्होंने कहा कि नए नियम के अभ्यास और शिक्षण ने गुलामी की संस्था को ऐसे माहौल में ला दिया है जिसमें यह केवल मुरझा सकती है और मर सकती है।

और ऐसा हुआ. और मैं यहां एक अन्य स्रोत का उल्लेख करूंगा। यह स्क्रीन पर है, लेकिन यहां आप जर्नल ही देखते हैं।

यह यहां के एक पूर्व प्रोफेसर द्वारा किया गया है। हम उसे जिमी एगन कहते थे। वह अब पादरी में है, लेकिन उसने एक बहुत अच्छा लेख लिखा है जो अभी पिछले साल प्रकाशित हुआ था, द गॉस्पेल वर्सेज स्लेवरी, सिक्स न्यू टेस्टामेंट आर्गुमेंट्स।

उनका तर्क है कि नए नियम में, हम गुलामी का समर्थन नहीं देखते हैं, बल्कि गुलामी का ऐसा वर्णन और सम्मान देखते हैं जो उस समय भी लोगों को होना चाहिए था, और कुछ मामलों में संस्था की दुष्टता भी देखी गई थी। और यह कि नया नियम स्पष्ट रूप से गुलामी की निंदा करता है, और हमें गुलामी पर इसकी शिक्षा के लिए नए नियम को अधिक श्रेय देना चाहिए जो अपने समय से बहुत आगे थी, और फिर इस मामले में भी देखें, जैसा कि कई मामलों में होता है, चर्च ने हमेशा बाइबल को उस स्पष्ट दृष्टि की संपूर्णता के साथ नहीं पढ़ा है जैसा उसे पढ़ना चाहिए। तो 1 तीमुथियुस 6 के इन शुरुआती छंदों के बारे में मैं बस इतना ही कहना चाहता था, हालाँकि और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है। फिर हम एनआईवी बाइबिल में शीर्षक, झूठे शिक्षक और पैसे का प्यार पर आते हैं।

और मैं पद 2 के अंत में आने वाले शब्दों को दोहराऊंगा। ये वे चीजें हैं जिन्हें आपको सिखाना चाहिए और उन पर जोर देना चाहिए क्योंकि वह अब शिक्षण के इस मुद्दे पर आगे बढ़ते हैं जो अध्याय 1 में शुरुआत से ही दोहराया गया है। टिमोथी जिस समस्या का सामना कर रहा है और जिस चुनौती का सामना करने के लिए उसे मजबूत होना है, वह है ये झूठे शिक्षक जो स्पष्ट रूप से काफी परिष्कृत और काफी प्रभावी और काफी दुर्जेय हैं, क्योंकि पॉल को वापस लौटना पड़ता है और वह एक और कड़ी चोट करता है कि उनका एमओ क्या है, वे कैसे काम करते हैं, और

अच्छी, शुद्ध और सच्ची चीजों से इसका प्रतिकार करने के लिए टिमोथी के पास कौन से संसाधन हैं। पौलुस पद 3 में कहता है, यदि कोई उससे भिन्न शिक्षा देता है जो पौलुस तीमुथियुस को सिखा रहा है, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की सच्ची शिक्षा और ईश्वरीय शिक्षा से सहमत नहीं है, तो मैं वहीं रुक जाऊँगा। वह हमारे प्रभु यीशु मसीह की शिक्षा क्यों कहेगा? क्या यह पॉल की शिक्षा नहीं है? नहीं, यह पॉल की शिक्षा नहीं है।

वह यीशु मसीह के प्रेषित हैं। इसलिए, जैसा कि मैंने पहले व्याख्यान में कहा था, प्रेरित का मतलब है कि आप किसी और के अधिकार क्षेत्र में हैं और आप केवल उन्हें वही देने के लिए अधिकृत हैं जो आपके लिए खुला है। और इसलिए पॉल यही कर रहा है।

वह उन भावनाओं और दृढ़ विश्वासों को व्यक्त कर रहा है जो यीशु मसीह ने उस तक पहुँचाए हैं। यदि कोई इन बातों से सहमत नहीं है, श्लोक 4, तो वे अभिमानी हैं और कुछ भी नहीं समझते हैं। उन्हें शब्दों को लेकर विवादों और झगड़ों में अस्वस्थ रुचि होती है जिसके परिणामस्वरूप ईर्ष्या, कलह, दुर्भावनापूर्ण बातें, बुरे संदेह और भ्रष्ट दिमाग वाले लोगों के बीच निरंतर घर्षण होता है।

यह मुझे कुछ ब्लॉग साइटों पर जाने की याद दिलाता है और वहां जो कुछ है उसका लहजा याद दिलाता है। ऐसा लगता है कि पॉल कुछ ऐसा ही वर्णन कर रहे हैं। ये वे लोग हैं जिनसे सच्चाई छीन ली गई है और जो सोचते हैं कि भक्ति वित्तीय लाभ का साधन है।

दुनिया के कुछ हिस्सों में मैं गया हूँ जहाँ ऐसे लोग हैं जो मंत्री बनने के लिए उत्सुक हैं क्योंकि यह धन का स्रोत है। चाहे वह एक स्वतंत्र चर्च हो या चाहे वह पश्चिमी संप्रदाय हो जिसके माध्यम से शायद उपनिवेशवाद उस देश में मौजूद है। मुझे लगता है कि यह एंग्लिकन चर्च है और पूरे अफ्रीका में इसकी उपस्थिति है।

ऐसे लोगों का मूल्यांकन करना एक वास्तविक चुनौती है जो चर्च के लिए काम करना चाहते हैं क्योंकि कभी-कभी लोग कहेंगे कि पद पाने के लिए वे कुछ भी और कुछ भी मानते हैं ताकि उनकी आय हो और उनकी स्थिति हो। यह एक समस्या है और यह पूरी दुनिया में एक समस्या है। यह पश्चिम में भी एक समस्या है क्योंकि हमें ऐसे लोग मिलते हैं जो बहुत ही अपवित्र कारणों से मंत्रालय में आते हैं।

कभी-कभी एक शिक्षक के रूप में जो अपने कॉल और अपने दृष्टिकोण के बारे में बात करने वाले छात्रों को सलाह देता है, यह मदरसा स्तर पर इतना आम नहीं है। लेकिन जब मैं कॉलेज में पढ़ा रहा था तो मेरी मुलाकात बहुत से ऐसे युवकों से हुई जिनके इरादे बहुत बेईमान थे। वे मूलतः सत्ता चाहते थे।

या एक मामले में मुझे एक युवक याद आता है जो इस बात से जूझ रहा था कि मदरसा कहां जाए। उनके पिता वर्षों पहले एक ऐसे मदरसे में गए थे जहाँ अब वास्तव में बाइबल बिल्कुल भी नहीं पढ़ाई जाती थी। एक ओर, बेटे का दृढ़ विश्वास था कि मैं वास्तव में एक मदरसे में जाना चाहूँगा जहाँ मुझे बाइबिल और ईसाई सुसमाचार सिखाया जाएगा।

लेकिन मेरे पिताजी ने मुझे इसकी पेशकश की और फिर उन्होंने इस विशाल पोर्टफोलियो का वर्णन किया। उनके पिता एशियाई थे और उनके पिता अमीर हो गए थे, उन्होंने अपने बेटे से कहा कि यदि तुम मेरे मदरसे में जाओगे, जिसमें मैं गया था, तो मैं तुम्हें यह पोर्टफोलियो दूंगा। और इस युवक ने मुझसे कहा कि मैं इस कॉलेज के क्षेत्र में गाड़ी चलाता हूँ जो एक समृद्ध क्षेत्र में भी था।

उन्होंने कहा कि मैं ये घर देखता हूँ और ये कारें देखता हूँ। और उसने एक मिनट सोचा और उसने कहा कि मैं यही चाहता हूँ। मैंने उसे चेतावनी दी।

मैंने कहा यह पागलपन है। हम बाद में अध्याय में देखने जा रहे हैं। अपने आप को पैसे के प्यार से मुक्त करें।

लेकिन वह अपने पिता के मदरसे में गये। वह पैसे की बर्बादी को अस्वीकार नहीं कर सका। वे सोचते हैं कि भक्ति वित्तीय लाभ का एक साधन है।

लेकिन पॉल ने यहां स्थिति को एक तरह से पलट दिया है। उनका कहना है कि संतोष के साथ भक्ति करना महान लाभ है। पैसे की तलाश का असंतोष, वह एक ट्रेडमिल है।

वह एक ब्लैक होल है। यह वह संतुष्टि नहीं है जो ईश्वरीयता प्रदान करती है। लेकिन भक्ति महान लाभ के साथ बेहतर संतुष्टि प्रदान करती है।

और यहाँ क्यों है। हम दुनिया में कुछ भी नहीं लाए और हम इससे कुछ ले नहीं सकते। परन्तु यदि हमारे पास भोजन और वस्त्र हो तो हम उसी में सन्तुष्ट रहेंगे।

हम ईसाई हैं, जिनका हृदय ईश्वर को जानने की संतुष्टि से भरा है। और यह जानने की संतुष्टि कि हमारा जीवन ईश्वर द्वारा निर्देशित और देखरेख किया जाता है और उसने हमें अपनी चुनी हुई जगह पर स्थानांतरित कर दिया है। और हम भजनहार के साथ कह सकते हैं कि हमारी पंक्तियाँ सुखद स्थानों पर गिरी हैं और हम अपनी परिस्थितियों में संतुष्टि पा सकते हैं क्योंकि हम समझते हैं कि भगवान हमें वहाँ ले आए हैं।

वह हमें वहाँ बनाए रखेगा और वह हमारे साथ और हमारे लिए चीजों को आगे बढ़ाएगा। जो धनी बनना चाहते हैं, वे परीक्षा, जाल और बहुत सी मूर्खतापूर्ण और हानिकारक लालसाओं में फँसते हैं, जो लोगों को विनाश और विनाश के गर्त में डुबा देती हैं। अब हमारे पास दुनिया के कई हिस्सों में कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्हें हम लॉटरी कहते हैं।

और यह कहानियाँ पढ़ना बहुत आम है कि जब लोग लॉटरी जीतते हैं तो उनके साथ क्या होता है। और अधिकांश मामलों में मूलतः यह उनके जीवन को बर्बाद कर देता है। जब उनकी अमीर बनने की इच्छा पूरी हो जाती है तो यह इतनी विनाशकारी होती है कि सारा पैसा मिलने के बाद उनका जीवन पैसा पाने से पहले की तुलना में बदतर हो जाता है।

श्लोक 10 पैसे का प्यार है और यह एक जड़ कहता है लेकिन आप इसे सभी प्रकार की बुराई की जड़ के रूप में अनुवादित कर सकते हैं। और आप सभी बुराइयों की जड़ का अनुवाद भी कर सकते हैं। मेरा मतलब है कि यह शायद थोड़ा अतिशयोक्तिपूर्ण है, शायद थोड़ा अतिशयोक्ति है।

लेकिन पुराने अनुवाद कहते हैं कि पैसे का प्यार सभी बुराइयों की जड़ है। यह इतनी व्यापक बुराई है कि वास्तव में इसे कम करके आंका नहीं जा सकता। दुनिया में चल रही अधिकांश बुराई किसी के प्यार, किसी के लालच, पैसे के प्रति उनके प्यार का परिणाम है।

मैं तो यहां तक कहूंगा कि यूक्रेन पर रूस का आक्रमण कुछ हद तक आर्थिक रूप से प्रेरित है। कुछ लोग पैसे के लिए उत्सुक हैं, और मुझे लगता है कि विशेष रूप से चर्च में लोगों के बारे में पॉल की सोच, पैसे के लिए उत्सुक कुछ लोग विश्वास से भटक गए हैं और खुद को कई दुखों से भर लिया है। इसलिए, टिप्पणियों के लिए, मैं नंबर एक कहूंगा कि प्रेरितिक शिक्षा से असहमत होना और अक्सर मौद्रिक लाभ के लिए इसका विरोध करना मानव स्वभाव है।

मुझे लगता है कि यह सिर्फ इंसानों की एक प्रवृत्ति है और यह अच्छा है जब आप किसी चर्च में सेवा कर रहे होते हैं और बहुत अधिक असहमति नहीं होती है, चीजें एक तरह से आगे बढ़ रही होती हैं। लेकिन मंत्रालय में अक्सर ऐसा होता है कि एक या एक से अधिक लोग या पार्टियां सामने आएंगी, चर्च जितना बड़ा होगा इसकी संभावना उतनी ही अधिक होगी। आपके पास कम से कम हम उन्हें चीखने वाले पहिये कह सकते हैं।

जो लोग हमेशा किसी न किसी बात को लेकर शिकायत करते रहते हैं या कुछ मांग करते हैं या पादरी या चर्च पर उस दिशा में जाने के लिए दबाव डालते हैं जो शायद उतना स्वस्थ नहीं है। या ऐसे लोग हैं कि हर बार जब आप किसी कक्षा को पढ़ाते हैं, तो वे अपना हाथ उठा देते हैं और वे आपसे असहमत हो जाते हैं। या मैं एक बहुत प्रसिद्ध पादरी के बारे में सोचता हूं जिसके उपदेशों पर इतनी अच्छी तरह से शोध किया गया था और लिखा गया था कि वे प्रकाशित हुए थे।

लेकिन हर सोमवार या मंगलवार को अपने उपदेश के बाद वह एक ऐसे शहर में प्रचार करते थे जहाँ एक ईसाई कॉलेज था और इसलिए वहाँ बहुत सारे प्रोफेसर थे जो उनके उपदेशों में भाग लेते थे। और हर सोमवार या मंगलवार को उसे एक निश्चित प्रोफेसर से विस्तृत आलोचना मिलती थी जो उसे पसंद नहीं करता था और उसका उपदेश भी पसंद नहीं करता था। तो एक तरफ एक ईसाई प्रकाशक उपदेशों को प्रकाशित कर रहा है, लेकिन मण्डली में कोई है जो सिर्फ उसके शरीर में एक कांटा है और हमेशा उन चीजों की ओर इशारा करता है जो उसे लगता है कि गलत हैं।

और वह एक चर्च का सदस्य था इसलिए उसे इस व्यक्ति से निपटना पड़ा। यह मंत्रालय के परिदृश्य की एक विशेषता मात्र है। बेशक, चरम मामलों में, यदि यह ऐसे विभाजन का कारण बनता है जैसा कि हम टाइम्स में देखने जा रहे हैं, तो कभी-कभी कार्रवाई करनी पड़ती है।

और मेरा मानना है कि अत्यधिक मामलों में यदि कोई व्यक्ति ऐसी बातें सिखा रहा है जो विधर्मी हैं तो एक समय ऐसा आता है जब उस व्यक्ति को बहिष्कृत करना पड़ता है और विभिन्न चर्चों के पास किसी से भोज रोकने या प्रार्थना करने के बाद उन्हें अनुशासन में रखने के अलग-अलग

साधन होते हैं और से बात की और चेतावनी दी. मैथ्यू 18 में वापस, चर्च में किसी ऐसे व्यक्ति से निपटने के प्रावधान हैं जिनके साथ असहमति है। भक्ति के लाभ के संदर्भ में, भक्ति के वास्तविक लाभ, संतोष के साथ जैसा कि पॉल कहते हैं, उन्होंने तीन चीजों का उल्लेख किया है जो रेखांकित करने योग्य हैं।

नंबर एक, श्लोक सात में यथार्थवाद है कि हमारे पास क्या है। और मैंने इसे उद्धरण चिह्नों में रखा है क्योंकि हमारे पास कुछ भी नहीं है। हम दुनिया में नंगे आये थे, नंगे ही जायेंगे।

हमारे पास सब कुछ उधार है। और जो हम उद्धृत करते हैं वह भी अस्थायी है। और मैं यहां स्क्रीन पीओडी पर आया हूं जब हम सभी उस भगवान के पास लौट आए हैं जिसने हमें बनाया है।

और पीओडी मृत्यु पर देय है। जब हम मरेंगे, तो हमारे पास जो कुछ भी है, हम उसे समर्पित कर देंगे। और यह किसी और के पास होगा।

तो यह याद रखने वाली एक स्वस्थ बात है कि हमें जो दिया गया है हम उसके प्रबंधक हैं और हम उन चीजों पर अपना प्यार केंद्रित नहीं करना चाहते क्योंकि यह स्थायी नहीं है। भगवान है। चीजें नहीं हैं।

श्लोक आठ में हमें जो कुछ हमारे पास है उसमें संतुष्टि के आशीर्वाद की याद दिलाई गई है। यदि हमारे पास भोजन और वस्त्र हैं, तो हम उसी में संतुष्ट रहेंगे। और हम जान सकते हैं कि काश हमारे पास और अधिक होता।

हम जान सकते हैं कि वास्तविक रूप से हमारे पास पर्याप्त नहीं है, खासकर यदि हमारे पास बच्चे हैं। अक्सर आप बस यही सोचते रहते हैं कि आप अपना गुज़ारा कैसे करेंगे। लेकिन सुसमाचार और शालोम के बारे में एक बड़ी बात जो ईश्वर प्रशासित करता है, वह हमारे साथ इस तरह से हो सकता है कि हम आशंका होने पर भी रात में आराम कर सकते हैं।

हम आश्चर्य हो सकते हैं कि उसने हमारे भविष्य के लिए हमें कवर कर लिया है। और पॉल इसी के बारे में बात कर रहा है, संतुष्टि। यदि इस समय हमारे पास पर्याप्त है, तो जो हमारे पास है हम उसमें संतुष्ट रह सकते हैं।

और युगों-युगों से कई संत और हम धर्मग्रंथों में भी देखते हैं, उनके पास इस समय पर्याप्त नहीं है। और फिर भी वे अभी भी परमेश्वर से संतुष्टि पाते हैं। पॉल यह जानता है और इसलिए वह इसकी सराहना करता है।

फिर अंततः हम प्रलोभन, जाल, इच्छाओं से मुक्ति और ईश्वर के प्रेम के बजाय धन के प्रेम के कारण होने वाले विनाश को देखते हैं। और जो लोग किसी ऐसी चीज़ से प्यार करते हैं जिसके बारे में बाइबल कहती है कि वे उससे प्यार नहीं करते हैं, अक्सर वे इसे नकारात्मक दृष्टि से देखेंगे, और वे एक तरह से चिढ़ेंगे और गुर्गएँगे और उन्हें यह पसंद नहीं आएगा कि उन्हें बताया जाए कि यह अच्छा नहीं है। लेकिन ईश्वर जानता है कि उसके लोगों के लिए क्या सबसे अच्छा है और

कभी-कभी जिन चीज़ों के लिए हम सबसे बुरा चाहते हैं, ईश्वर अपने आदेशों से हमारे हाथों पर थप्पड़ मारते हैं और कहते हैं, नहीं, वहाँ मत जाओ।

पीछे मुड़कर देखने पर हमें पता चलता है कि वह परोपकारी था, वह बुद्धिमत्तापूर्ण था, वह हमारे सर्वोत्तम हित में था। और हम ईश्वर को धन्यवाद देते हैं कि उसने पीछे मुड़कर देखा कि कैसे उसने हमें उस चीज़ से बचाया जो हमारी आत्माओं को नष्ट कर सकती थी क्योंकि यह इफिसुस में आत्माओं को धमकी दे रही थी जैसा कि पॉल ने तीमुथियुस को लिखा था। अब हमारे पास तीमुथियुस पर अंतिम आरोप है और एनआईवी बाइबिल में शीर्षक के संदर्भ में, यह 1 तीमुथियुस का अंतिम खंड है।

परन्तु तुम परमेश्वर के जन हो। अब नए नियम में बहुत सारे परमेश्वर के लोग थे, लेकिन नए नियम में किसी और को परमेश्वर का आदमी नहीं कहा गया है। पुराने नियम में, ऐसे कई भविष्यवक्ता हैं जिन्हें ईश्वर का आदमी कहा जाता है, लेकिन यह एक प्रकार से तीमुथियुस के लिए पुराने नियम की अभिव्यक्ति का स्थानांतरण है।

और वह इसकी सराहना करेगा क्योंकि वह पुराने नियम का छात्र था। उनका पालन-पोषण पुराने नियम को पढ़ते हुए किया गया था। आप, भगवान के आदमी, इस सब से भागते हैं, इसलिए यह आपका पहला अनिवार्य है, और धार्मिकता, भक्ति का पीछा करें, फिर से वह शब्द है, विश्वास, प्रेम, धीरज।

और मुझे लगता है कि ग्रीक में 'नहीं' और 'वहाँ' है। यह एक और उदाहरण है जहां पॉल ने कई चीज़ों को हटा दिया है और यह कोई साफ-सुथरा क्रम नहीं है, एक, दो, तीन, चार और पांच। यह उन विशेषताओं का एक त्वरित कोलाज है जो सुसमाचार उन लोगों में पैदा करता है जो अच्छी खबर के माध्यम से भगवान की तलाश करते हैं और चरित्र लक्षण बन जाते हैं जो हमें भगवान के सामने और भगवान के साथ और भगवान की सेवा में संतुष्टि का जीवन जीने में सक्षम बनाते हैं।

विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़ें. यह आसान नहीं होगा. थाम लो, उस अनन्त जीवन को थाम लो जिसके लिए तुम्हें तब बुलाया गया है जब तुमने कई गवाहों की उपस्थिति में अपना अच्छा अंगीकार किया है।

यह दूसरी बार है कि पॉल ने किसी घटना का उल्लेख किया है कि तीमुथियुस ने खुद को समर्पित कर दिया था और भगवान के सामने उसकी सराहना की गई थी और उसके लिए प्रार्थना की गई थी और उसकी बुलाहट को मान्यता दी गई थी। वह फिर उसी का जिक्र करता है. उस बात को ध्यान में रखें जो तब स्पष्ट थी जब आपने कई गवाहों की उपस्थिति में अपना इकबालिया बयान दिया था।

ईश्वर की दृष्टि में, यह बहुत ही गंभीर भाषा है, ईश्वर की दृष्टि में जो हर चीज़ को जीवन देता है और ईसा मसीह की दृष्टि में, जिन्होंने पोंटियस पिलातुस के सामने गवाही देते हुए अच्छा कबूलनामा किया। इसलिए, वह वास्तव में तीमुथियुस को मसीह के साथ अपने मिलन को याद करने के लिए बुला रहा है और उसकी स्थिति में मसीह की समानता कैसी दिखनी चाहिए और वह जिस चीज़

का सामना कर रहा है वह कुछ ऐसा नहीं है जिसका स्वयं मसीह यीशु ने कभी सामना नहीं किया। उन्होंने इसका सामना किया।

पोंटियस पीलातस के सामने गवाही देते समय उसने एक अच्छी स्वीकारोक्ति की। मैं आपसे आरोप लगाता हूँ, वह शब्द है जिसे हमने पद 1 में देखा था, इसलिए यह अध्याय 1 में है। इसलिए, अध्याय 6, तीमुथियुस को विश्वासयोग्यता के इस आदेश के तहत रखने के संदर्भ में अध्याय 1 में निर्धारित की गई बातों को क्रमबद्ध कर रहा है। मैं तुम्हें इस आदेश का पालन करने का आदेश देता हूँ, इफिसुस में रहने का आदेश, उसकी सेवा में वफादार रहने का आदेश, झूठे शिक्षकों को न देने का आदेश, आदेश, हम 2 तीमुथियुस में देखेंगे कि वह कैसा है उन लोगों से निपटें जो सुसमाचार का विरोध कर रहे हैं और उसका विरोध कर रहे हैं और पॉल की शिक्षा का विरोध कर रहे हैं।

इस आदेश को बिना किसी दोष या दोष के मानना और हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने तक ईमानदारी से करना, जिसे भगवान अपने समय में पूरा करेंगे। यह जल्द भी हो सकता है, बाद में भी हो सकता है, लेकिन यह होगा। भगवान, धन्य और एकमात्र शासक, राजाओं के राजा और भगवानों के भगवान, जो अकेले अमर हैं और जो अगम्य प्रकाश में रहते हैं, जिन्हें किसी ने नहीं देखा या देख नहीं सकता, उनके लिए हमेशा सम्मान और शक्ति बनी रहे। तथास्तु।

वहाँ एक और स्तुतिगान है और मुझे लगता है कि पॉल यहाँ जो कर रहा है, सचेतन और अचेतन रूप से, वह ईश्वर के प्रति इस उच्च प्रशंसा को व्यक्त करके, उसे जागृत कर रहा है, मुझे लगता है कि वह तीमुथियुस का आह्वान कर रहा है, तीमुथियुस को उसी दृष्टि की पुष्टि करने के लिए आमंत्रित कर रहा है, जो हमारी सभी समस्याओं को समाप्त कर देता है परिप्रेक्ष्य। मैं आपके बारे में नहीं जानता, लेकिन कभी-कभी मुझे रात में सोने में परेशानी होती है और मेरे पास कई युक्तियाँ हैं और उनमें से एक है, धर्मग्रंथ का हवाला देना और फिर शायद प्रेरितों के पंथ का हवाला देना, प्रभु की प्रार्थना करना, 23वां भजन कहना, प्रार्थना करना लोगों के लिए, और किसी बिंदु पर, अक्सर मुझे ईश्वर की उपस्थिति का एहसास होगा।

और यह हर चीज़ को परिप्रेक्ष्य में रखता है। यह मुझे चीजों को भगवान के हाथों में छोड़ने की अनुमति देता है। वह एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो इन सभी चीजों को संभाल सकता है, जिनसे मेरा कुछ संबंध है, लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकता।

परन्तु परमेश्वर अपनी महिमा और अपनी महानता के कारण बहुत कुछ कर सकता है। तो, ईश्वर का दर्शन जो इतना ऊँचा है, इतना सच्चा है, इतना व्यापक है, यह उस तरह की चीज है जो पॉल या टिमोथी या आज के ईसाइयों जैसा है, हम खुद को याद दिलाने के लिए बार-बार लौटते हैं कि हम कौन हैं और खुद को याद दिलाएं कि हम खुद को किसके हाथों में सौंप सकते हैं। और यह अवलोकनों की ओर ले जाता है।

नंबर एक, ईश्वर अपनी सेवा में निष्ठा के लिए सबसे बड़ा प्रेरक है, बहुत ही प्रत्यक्ष और वास्तव में अवर्णनीय अर्थ में। हम भगवान का वर्णन नहीं कर सकते। हम वास्तव में अपने मन को उसके इर्द-गिर्द नहीं लपेट सकते।

हम उसे पूरी तरह से जानने योग्य और निश्चित रूप से प्रबंधनीय नहीं अनुपात तक कम नहीं कर सकते। वह भगवान है। नहीं थे।

और अपनी महानता और महिमा में, वह अपनी सेवा में निष्ठा के लिए सबसे बड़ा प्रेरक है। दूसरे, ईश्वर अपनी इच्छा को प्रभावी ढंग से पूरा करने में सक्षम बनाता है। और मैं यहां इस छोटे से खंड के शुरुआती श्लोक के बारे में सोच रहा हूं, भागो और पीछा करो।

वह अपनी इच्छा को प्रभावी ढंग से पूरा करने में सक्षम बनाता है, न कि केवल गलतियों से बचने में। और वास्तव में, इसी तरीके से तीमुथियुस प्रबल होगा। परमेश्वर ने जो उसके सामने रखा है उसका अनुसरण करके वह प्रबल होगा।

ऐसा न करने पर, उसे भागना पड़ सकता है। लेकिन मैं इसे पॉल की सकारात्मक नैतिकता कहता हूं। और मैं इसका फिर से उल्लेख करूंगा, मुझे यकीन है कि 2 तीमुथियुस के संबंध में, लेकिन हम बुराई से बचते हैं, न कि केवल बुराई से बचने और यह कहने से कि, भगवान को देखो, मैं बहुत अच्छा कर रहा हूं।

मैं एक्स, वाई और जेड नहीं कर रहा हूं। जिस तरह से हम बुराई से बचते हैं, जिस तरह से हम पॉल गलाटियन्स में शरीर का शिकार बनने से बचते हैं, वह है चलना, आत्मा में अपना जीवन जीना। इसलिए यदि हम अपने जीवन को ईश्वर का अनुसरण करने की अच्छी चीजों से भर देते हैं, तो हमारे पास उन चीजों के प्रलोभन में आकर अपना समय बर्बाद करने के लिए समय और ऊर्जा नहीं होगी जो हम धर्मग्रंथों से जानते हैं या अनुभव से जानते हैं जो अच्छी नहीं हैं। और कभी-कभी लोग बुरे काम न करने की कोशिश में बहुत सारी ऊर्जा खर्च करते हैं और उन्हें अपने जीवन को सेवा और भगवान की खोज में समर्पित करने के तरीकों का पता लगाने की आवश्यकता होती है।

और यदि हम प्रकाश में चलें, तो अस्थिरता में न भटकेंगे। तीसरा अवलोकन, मसीह में विश्वास के माध्यम से ईश्वर के प्रति सम्मान जो स्तुतिगान को उजागर करता है, अच्छे धर्मशास्त्र और नैतिकता को परिपूर्ण करता है। मेरा मतलब है, मुझे लगता है कि टिमोथी के पास अच्छा धर्मशास्त्र है।

उसने इसे उनमें से सर्वश्रेष्ठ से सीखा है, साथ ही उसे अपनी माँ और दादी से भी अच्छी नींव मिली है। और मुझे लगता है कि वह ईश्वर के निर्देशन में अपने व्यावहारिक कार्यों, अपने नैतिक जीवन में बहुत आगे बढ़ गया है। लेकिन जो अच्छे धर्मशास्त्र और अच्छे अभ्यास को परिपूर्ण बनाता है और जो इसे नवीनीकृत करता है और जो इसे प्रमाणित करता है वह ईश्वर के लिए उस प्रकार का प्रेम है जिसके परिणामस्वरूप ईश्वर के लिए इस प्रकार की स्तुति होती है जिसे हम छंद 15 और 16 में देखते हैं।

मेरा मतलब है, हम जो देखते हैं वह स्तुति भाषा या उच्चाटन भाषा है, लेकिन पॉल के दिल और आत्मा में इसका स्रोत ईश्वर के प्रति गहरा प्रेम है। और उस प्रकार की स्तुति-विद्या अच्छे विश्वास और अच्छे अभ्यास के भगवान के लिए केक पर चरी लगाती है। आप लगभग सोच सकते हैं कि

पत्र यहीं समाप्त होने वाला है, लेकिन पॉल जारी रखता है, शायद इसलिए क्योंकि उसे यह सता रहा है कि तीमुथियुस एक ऐसी चुनौती का सामना कर रहा है जिसे उसे दोहराने की ज़रूरत है कि एक बड़ी समस्या क्या है और तीमुथियुस को कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए यह।

और आपको अनुमान लगाना होगा कि इफिसस में, जो एक समृद्ध शहर था, वहां ऐसे लोग थे जो मंडली या मंडलियों में थे जिनके पास पैसा था। और जिन लोगों के पास पैसा है वे चर्च के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि भगवान के मार्गदर्शन के माध्यम से, वे चर्च के काम का संसाधन करते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में एक मदरसा परिसर की एक इमारत में, जहाँ मैं खड़ा हूँ, वहाँ कोई कक्षा नहीं होती, यदि यह धनी दानदाताओं के लिए नहीं होती।

क्योंकि मदरसा के छात्रों के पास परिसर खरीदने, भवन बनाने, प्रोजेक्टर और कंप्यूटर और इस तरह की चीजें खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं। इसलिए परमेश्वर लोगों को साधनों के साथ खड़ा करता है ताकि उनके माध्यम से दुनिया में उसका काम चल सके। लेकिन कभी-कभी जो लोग अमीर होते हैं, उनके पास अपने धन के माध्यम से बहुत शक्ति होती है और यदि वे अपवित्र दिशाओं में आगे बढ़ते हैं तो वे बहुत सारी समस्याएं पैदा कर सकते हैं क्योंकि वे पादरी या चर्च पर अनैतिक काम करने के लिए दबाव डाल सकते हैं।

या वे अपनी शक्ति के कारण यह सोच सकते हैं कि वे जो सोचते हैं वह शायद परमेश्वर के वचन से भी अधिक सत्य है। और अपने पूरे जीवन में मैंने धनी लोगों को देखा है जो या तो स्वयं अपने प्रभाव से या कुछ मामलों में, एक उल्लेखनीय मामले का उल्लेख नहीं करूंगा, लेकिन उन्होंने भूत लेखकों को काम पर रखा और उन्होंने किताबें लिखीं। उन्होंने वास्तव में उन्हें नहीं लिखा, भूत लेखकों ने किताबें लिखीं।

और वे वास्तव में एक तरह की पागल किताबें थीं और उन्होंने चर्चों में परेशानी पैदा की। लेकिन वह ऐसा कर सका क्योंकि उसके पास पैसा था। और इसकी पूरी संभावना है कि तीमुथियुस के पास चर्च में ऐसे लोग थे जो अपने पैसे के माध्यम से अच्छा कर सकते थे लेकिन समस्याएं भी पैदा करते थे क्योंकि वे अमीर हैं और अमीर लोग अपना वजन इधर-उधर फेंकने लायक होते हैं और कभी-कभी, वे उतने स्मार्ट नहीं होते जितना वे सोचते हैं और कभी-कभी, वे उतने अच्छे नहीं हैं जितना वे सोचते हैं।

वे विनम्र नहीं हैं और हो सकता है कि वे वास्तव में धर्मशास्त्र को उतना अच्छी तरह नहीं जानते जितना वे सोचते हैं। इसलिये इस संसार में जो धनवान हैं, उन्हें आज्ञा दे, कि वे अहंकार न करें, और न धन पर आशा रखें। एक अमीर व्यक्ति के लिए यह कठिन है।

यीशु ने कहा कि एक अमीर व्यक्ति के लिए स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है। बहुत कठिन। उनकी आशा उस धन पर न रखें जो बहुत अनिश्चित है, बल्कि उनकी आशा ईश्वर पर रखें जो हमें हमारे आनंद के लिए सब कुछ भरपूर मात्रा में प्रदान करता है।

उन्हें अच्छा करने, अच्छे कर्मों से समृद्ध होने, उदार होने और साझा करने के लिए तैयार रहने की आज्ञा दें। जो लोग अमीर हैं उनके लिए सुसमाचार का यही अर्थ है। ऐसा नहीं है कि ईश्वर आपको धन इकट्ठा करने में मदद करता रहेगा, हालांकि वह आपको समृद्ध बनाता रहेगा, बल्कि यह कि

ईश्वर ने दुनिया में ईश्वर के काम का समर्थन करके और व्यावहारिक मंत्रालय देकर ईश्वर की महिमा करने के लिए आपको चीजें प्रदान की हैं। उदारता देना, उदाहरण के लिए विधवाओं जैसे अन्य जरूरतमंद लोगों के साथ साझा करने की इच्छा।

इस तरह, वे अपने लिए एक मजबूत नींव के रूप में खजाना जमा करेंगे। फिर, यही यीशु की शिक्षा है। स्वर्ग में अपने लिये धन इकट्ठा करो, जहां कीड़े और जंग भ्रष्ट नहीं करेंगे।

ताकि वे उस जीवन को वश में कर सकें जो वास्तव में जीवन है। एक अच्छा जीवन है जिसे पैसे से खरीदा जा सकता है, लेकिन फिर एक वास्तविक अच्छा जीवन भी है जिसे पैसे से नहीं खरीदा जा सकता है, और वह है भगवान के साथ संगति, और वह जीवन का आनंद और संतुष्टि है जो भगवान की इच्छा को पूरा करने के लिए समर्पित है। फिर यहां प्रवचन में एक छोटा सा विराम है, मनोवैज्ञानिक और पॉल वास्तव में अपने अंतिम शब्दों में बदल जाता है।

टिमोथी, मुझे लगता है कि यह दूसरी बार है जब उसने अपना नाम कहा है, जो आपकी देखभाल के लिए सौंपा गया है उसकी रक्षा करें। और यह उनके द्वारा कही गई हर बात को संक्षेप में प्रस्तुत करने का एक तरीका है। पॉल ने इफिसुस छोड़ दिया है, उसे परमेश्वर के लोगों को सौंपा गया है, और उसे रोमन साम्राज्य के महान शहरों में से एक में सुसमाचार मंत्रालय सौंपा गया है।

इसकी रक्षा करो. ईश्वरविहीन बकबक और जिसे गलत तरीके से ज्ञान कहा जाता है, उसके विरोधी विचारों से दूर हो जाओ, जिसे कुछ लोगों ने स्वीकार किया है और ऐसा करते हुए विश्वास से दूर हो गए हैं। मुझे लगता है कि पॉल ने अध्याय एक में जिस विषय को पहली बार खोला है उस पर एक अवधि है जब वह झूठे शिक्षकों के बारे में बात करता है।

और वह बार-बार उनके पास लौटता है, लेकिन जैसे ही वह समाप्त करता है, मुझे लगता है कि निष्कर्ष उचित है। यह पॉल के लिए वह लिखने के लिए एक प्रमुख प्रेरक है जो वह लिखता है क्योंकि वह जानता है कि, वह जानता है कि टिमोथी इसका सामना कर सकता है, लेकिन वह जानता है, मानवीय रूप से कहें तो, यह एक करीबी चीज़ होने जा रही है। क्योंकि ये शक्तिशाली विचार हैं, ये प्रभावशाली लोग हैं, इनके पास संसाधन हैं।

चर्च संसाधनों के बिना काम नहीं कर सकता, जिसका अर्थ है, आपके पास कुछ अमीर लोग हैं, लेकिन हो सकता है कि ये अमीर लोग समस्या का हिस्सा हों। और भगवान इसे सुलझाने में टिमोथी की मदद कर सकते हैं, लेकिन यह एक आसान प्रक्रिया नहीं होगी। मैं यहां केवल यह बताना चाहता हूं कि इस शब्द ज्ञान के कारण, पुराने साहित्य में इसे इस बात का प्रमाण माना जाता था कि यह देर से लिखा गया था, यह पॉल नहीं था, यह पहली शताब्दी के अंत में था, यह दूसरी शताब्दी की शुरुआत थी क्योंकि यह ज्ञानवाद का संदर्भ है।

लेकिन बहुत से टिप्पणीकारों का मानना है कि गूढ़ज्ञानवाद उससे भी काफी बाद का है जिसे टिमोथी ने छद्मलेखिक प्रथम के अधिकांश अनुमानों से भी अनुमति दी थी, और किसी भी मामले में, यदि पॉल ने इसे लिखा है, जो कि मेरी धारणा है, तो वास्तव में इतने आरंभ में गूढ़ज्ञानवाद जैसी किसी चीज का कोई सबूत नहीं है। पहली सदी. तो, यह दूसरी शताब्दी की राजधानी जी ज्ञानवाद का संदर्भ नहीं है। जाहिर है, ज्ञान सिर्फ एक शब्द था जिसका उपयोग उस दृष्टिकोण को

सारांशित करने के लिए किया गया था जो सुसमाचार विरोधी, या पॉल विरोधी, या मसीह विरोधी था।

वह इसका सारांश था। मैं नहीं जानता कि क्या यह इसके लिए पॉल और टिमोथी का सारांश शब्द था, या क्या यह एक ऐसा शब्द था जिसका उपयोग उन्होंने इसके लिए किया था। हम ये बातें जानते ही नहीं।

लेकिन यदि आप जानना चाहते हैं कि ज्ञान क्या है, तो पहले तीमुथियुस को पढ़ें, और हर बार जब आप झूठे शिक्षकों का संदर्भ लें, तो लिखें, ठीक है, उन्होंने क्या कहा? वे क्या गलत कर रहे थे? वंशावली, और मूर्ति अटकलें, और ये सभी रणनीतियाँ और दृढ़ विश्वास जो मसीह के बारे में शिक्षाओं के प्रतिद्वंद्वी थे। यही ज्ञान है। तो, इसकी रूपरेखा देखने के लिए यह वहीं है, और पॉल यहां वही दोहराता है जो वह हमेशा से कहता रहा है।

झूठे शिक्षक हैं। वे लोगों को गुमराह कर रहे हैं। वे विश्वास से भटक रहे हैं।

पहले अध्याय से हाइमन एम्स और अलेक्जेंडर को याद करें। जो कुछ तुम्हें सौंपा गया है, उसकी रक्षा करो, उसकी रक्षा करो और इन मूर्खतापूर्ण अटकलों में मत उलझो। सकारात्मक बने रहें।

अपने सुसमाचार मंत्रालय की स्क्रिप्ट पर बने रहें। और यदि आप उनके मैदान में उतरते हैं तो आप जीत नहीं सकते। इसलिए उनके मामले में मत पड़ो।

उन्हें इतनी गंभीरता से लेने का शिष्टाचार और अनुग्रह न दें कि ऐसा लगे कि, आप जानते हैं, आप नहीं जानते कि आप अब मसीह में विश्वास करते हैं या नहीं। आप जिस बात पर विश्वास करते हैं वह उनके सभी विचारों की सही व्याख्या है। वे परमेश्वर और सुसमाचार के बचाने वाले सत्य के दायरे में भी नहीं हैं।

इसलिए, जैसा कि हम निष्कर्ष निकालते हैं, हम देख सकते हैं कि तीमुथियुस के आरोप का एक हिस्सा दूसरों पर आरोप लगाना है। उसे आत्माओं की परवाह है। वह स्वयं आरोपों के अधीन है, लेकिन उस आरोप का एक बड़ा हिस्सा इस बात से संबंधित है कि दूसरों को सुसमाचार को कैसे अपनाना है, इसे जीना है और इसके प्रति वफादार रहना है।

वह सिर्फ देहाती कार्य है। दूसरे, समृद्ध लोग भी हममें से बाकी लोगों की तरह ही ईश्वर के अधीन हैं। जबकि हमें भगवान के घर में हर किसी का सम्मान करना चाहिए, और इसमें अमीर लोग भी शामिल हैं, कभी-कभी, मंत्रियों के रूप में, हमें जागरूक रहना होगा कि ऐसे लोग हैं जो हमें हराने के लिए अपनी संपत्ति और स्थिति का उपयोग करने की कोशिश कर रहे हैं ताकि वे वास्तव में भाग सकें चर्च।

और यह कुछ ऐसा है जिसमें हममें से प्रत्येक को अपना रास्ता खोजना होगा। हो सकता है कि आप एक अमीर परिवार में पले-बढ़े हों, इसलिए आप अमीर लोगों के साथ व्यवहार करने के आदी हैं। लेकिन, मैं एक गैर-अमीर परिवार में पला-बढ़ा हूँ, इसलिए अमीर लोग मुझे हमेशा डराते रहते हैं।

क्योंकि यदि आप श्रमिक वर्ग से हैं, तो आप ऐसे ही बड़े होते हैं जैसे कि सत्ता और धन वाले लोग हों। और यदि आप मंत्रालय में हैं, तो आपको सावधान रहना होगा कि वे आपका मंत्रालय नहीं चलाएंगे या आपको विश्वास से विचलित नहीं करेंगे क्योंकि आपने मसीह के बजाय उन पर भरोसा किया है। और विशेष रूप से तब जब वे आपको अपना योगदान वापस लेने की धमकी देते हैं।

बहुत कठिन परिस्थिति. सच्चा धन उस चीज़ में निवेश है जिसे ईश्वर महत्व देता है। सच्चा धन उस चीज़ में निवेश है जिसे ईश्वर महत्व देता है।

यह स्वयं धन नहीं है जैसा कि यह दुनिया में मौजूद है। धन वह है जिसे ईश्वर महत्व देता है। ईसाई विकास का एक हिस्सा यह सीखना है कि ईश्वर वास्तव में क्या प्राथमिकता देता है और शालोम का मधुर स्थान, ईश्वर के साथ शांति कहाँ है।

किस चीज़ की खोज? खैर, यह सिर्फ आपके बैंक खाते की राशि नहीं है। शिष्यों का निर्माण एक ऐसा विश्वास है जिसकी रक्षा की जानी चाहिए और इसे बर्बाद नहीं किया जाना चाहिए। यही तीमुथियुस को सौंपा गया है।

आप जानते हैं, पैसा नहीं, इमारत नहीं, संस्था नहीं, शक्ति नहीं, बल्कि आत्माओं की अनमोल देखभाल, शिष्यों का निर्माण, जो यीशु के महान आदेश को पूरा करेंगे और उस श्रम में संगति के जीवन का आनंद लेंगे। इसकी रक्षा करनी होगी. ग़लत विश्वास या अभ्यास विश्वास को बचाने से दूर ले जा सकता है।

मुझे कभी-कभी लोगों में इस बात को लेकर अधीरता महसूस होती है कि, हमें बाइबल जो सिखाती है उस पर विश्वास क्यों करना है? खैर, ऐसी बहुत सी चीज़ें हैं जो अस्पष्ट हैं। उदाहरण के लिए, रोमियों 14 में एक पूरा अध्याय उन क्षेत्रों के बारे में है जहां यह व्यक्ति पर निर्भर है। यह सब महत्वपूर्ण है, लेकिन यह स्वतंत्रता है कि व्यक्तियों को कुछ चीज़ों के साथ अलग-अलग रास्ते अपनाने होंगे।

रोमियों 14 पढ़ें और आप देखेंगे कि मैं किस प्रकार की चीज़ों के बारे में बात कर रहा हूँ। लेकिन अगर हम वास्तविक केंद्रीय सुसमाचार शिक्षण के बारे में बात कर रहे हैं, तो वहां बहुत अधिक सहिष्णुता नहीं है। उदाहरण के लिए, इस पुस्तक में पहले हमने ऐसे लोगों को देखा जो पुनरुत्थान से इनकार कर रहे थे।

यदि लोग पुनरुत्थान, यीशु के शारीरिक पुनरुत्थान से इनकार करते हैं, तो यह आपको विश्वास से दूर ले जाएगा। और कभी-कभी यीशु के पुनरुत्थान को नकारना बाइबल से कम विचलन के साथ शुरू होता है, खैर, मुझे उस पर विश्वास क्यों करना है? मुझे उस पर विश्वास क्यों करना होगा? और पहली बात, ठीक है, आपको किसी भी चीज़ पर विश्वास करने की ज़रूरत नहीं है। और मैं अभी कुछ हफ़्ते पहले एक सामाजिक समारोह में था, और मैं एक महिला से बात कर रहा था, और उसने कहा, यह वास्तव में मायने नहीं रखता कि हम क्या विश्वास करते हैं, यह सिर्फ मायने रखता है कि हमारे पास विश्वास है।

बहुत से लोग ऐसा ही सोचते हैं, लेकिन यह सच नहीं है। और यह उन चीजों में से एक है जिसे 1 तीमुथियुस संबोधित करता है। अंत में, नंबर छह, जैसा कि 1 तीमुथियुस 2 में है, जहां पॉल कहता है, आपके लिए अनुग्रह, दया और शांति, ईश्वर की कृपा, और ईश्वर की कृपा जो कुछ भी लाती है वह तीमुथियुस का अंतिम संसाधन है और लेखन में पॉल के आत्मविश्वास का आधार है।

और निस्संदेह, यह एक अनुग्रह है जो मसीह की मध्यस्थता करता है जो उसकी आशा है। और इसलिए, उस अनुग्रह और उसकी आशा में, इन सभी धमकियों, इन सभी जालों और जालों और विकर्षणों के बावजूद, पॉल अंत में कहता है, और मुझे यह निष्कर्ष पसंद है, कृपा आप सभी पर बनी रहे, यह एकमात्र दूसरा व्यक्ति बहुवचन संदर्भ है 1 तीमुथियुस में। और मुझे लगता है कि यह तीमुथियुस से कह रहा है, मसीह का शरीर, यह तुम्हारे हाथों में है और यह तुम्हारे लिए और झुंड की सभी भेड़ों के लिए एक आशीर्वाद है।

और इसलिए, मुझे लगता है कि यह ईश्वर में विश्वास, सुसमाचार में विश्वास, तीमुथियुस में विश्वास, और तीमुथियुस के निर्देशन और मसीह के आधिपत्य के तहत सही काम करने के लिए मण्डली में विश्वास की पुष्टि है। अब, संक्षेप में, 1 तीमुथियुस और यह क्या सिखाता है, और मैं ईसाई सिद्धांत कहता हूं, और फिर मेरे पास एक फुटनोट है। सिद्धांत को यहां उसके व्यावहारिक प्रभावों के साथ धर्मशास्त्र के रूप में समझा जाता है।

और आज कुछ लेखों में हम ज्ञान या सैपिएंटियल धर्मशास्त्र के बारे में सुनते हैं। मुझे लगता है कि यह केविन वानहूसर ही हैं जो सैपिएंटियल थियोलॉजी के बारे में बात करते हैं। और मैं जानता हूं कि जोनाथन पेनिंगटन और जे. वेंडरवाल ड्राइडन ऐसे लेखक हैं जिन्होंने ईसाई शिक्षण को ऐसे तरीकों से समझने की आवश्यकता के बारे में हाल ही में बहुत कुछ लिखा है जो वास्तव में हमारे जीने के तरीके पर प्रभाव डालते हैं ताकि हम अपने पूरे जीवन में ईश्वर की महिमा करें, न कि सिर्फ हमारी सोच, लेकिन यह भी कि हम इस सोच के जाल में न पड़ें कि हम स्वर्ग जा रहे हैं क्योंकि हम कुछ चीजें सोचते हैं।

ऐसे बहुत से लोग हैं जिनके जीवन में इस बात के अधिक प्रमाण नहीं मिलते कि वे वास्तव में मसीह का अनुसरण कर रहे हैं। लेकिन वे चिंतित नहीं हैं क्योंकि उनका मानना है, खैर, जो महत्वपूर्ण है वह यह है कि मैं किसी चीज़ पर विश्वास करता हूँ। जैसे, मेरा मानना है कि यीशु मृतकों में से जी उठे।

और मैं चर्च जाता हूँ और कहता हूँ कि वह भगवान है। और इसलिए वे रोमियों 10 में से उन छंदों को निकालते हैं और कहते हैं, ठीक है, मैं बच गया हूँ क्योंकि मैं अपने दिल में विश्वास करता हूँ कि भगवान मृतकों में से जीवित हो गए हैं। और मैं कहता हूँ वह भगवान है।

परन्तु यीशु कहते हैं, तुम मुझे प्रभु क्यों कहते हो, और जो मैं कहता हूँ वह नहीं करते? मसीह का आधिपत्य हमारे व्यवहार में क्रांति ला देता है। और यह कर्मों से मुक्ति नहीं है। यह मसीह द्वारा किया गया उद्धार है, जो हमें इतना जकड़ लेता है कि वह हमें धार्मिकता, ईश्वरभक्ति, विश्वास और अच्छे कार्यों और उन सभी चीजों की सक्रिय खोज के जीवन में ले जाता है जिनसे मसीह में जीवन हमारे जीवन को समृद्ध करता है।

इसलिए, मैं यहां स्क्रीन पर जो कुछ भी है उसे नहीं पढ़ूंगा क्योंकि यदि आप इन व्याख्यानो को सुन रहे हैं, तो इनमें से बहुत कुछ बहुत दोहराव वाला होगा। लेकिन मैं बस संक्षेप में बताना चाहता हूं कि जो प्राथमिकताएं हम 1 तीमुथियुस में पाते हैं, वे सबसे पहले, अध्याय 1 और अध्याय 6 में ठोस या स्वस्थ शिक्षण हैं। और हम इसे 2 तीमुथियुस और तीतुस में भी देखने जा रहे हैं। और यह उससे संबंधित है जिसे मैंने देहाती नेतृत्व के दो ध्रुव कहा है।

शिक्षण, निर्देश, देहाती निरीक्षण, आध्यात्मिक निरीक्षण। यदि शिक्षण कमजोर है, तो झुंड कुपोषित हो जाएगा। मेरी एक पड़ोसी है जिसके पास मवेशी हैं, और उसके पास बहुत सारे मवेशी हैं लेकिन बहुत सारी जमीन नहीं है।

और इसलिए, मवेशी आमतौर पर यूसुफ के उस सपने में गायों की तरह दिखते हैं। वे बहुत दुबली गायें हैं। उन्हें अच्छा आहार नहीं मिलता।

और मंडलियाँ अपनी पसलियां दिखा देंगी यदि वे पवित्रशास्त्र की अच्छी शिक्षा से मोटे नहीं हुए हैं। और इसी कारण पौलुस तीमुथियुस से कहता है, अपने ऊपर और शिक्षा पर कड़ी दृष्टि रखो। इस पर कायम रहो, क्योंकि ऐसा करने से तुम अपना और अपने सुननेवालों का उद्धार करोगे।

1 तीमुथियुस में शिक्षा और शिक्षण के बहुत सारे अन्य सन्दर्भ। दूसरी बात जो मैं यहां कहूंगा वह यह है कि पादरियों पर अक्सर सामाजिक रूप से शामिल होने का दबाव होता है। और मुलाक़ात में शामिल होना एक अच्छी बात है, और यह एक अच्छी बात है।

और केवल लोगों के साथ रहने और आयोजन करने और बैठकों में शामिल होने में शामिल होना। लेकिन मंडलियों को उस समय को संरक्षित करने की आवश्यकता है जो एक पादरी को पढ़ने, सोचने और जो वह पढ़ाने जा रहा है उसे तैयार करने के लिए आवश्यक है। और कभी-कभी मंडलियों या मंडलियों के लोगों को यह पसंद नहीं आता क्योंकि वह जितना अधिक पढ़ाता है, उतनी ही अधिक गर्मजोशी लाता है, और उतना ही अधिक वह लोगों पर बाइबल पर वास्तव में ध्यान देने के लिए दबाव डालता है।

और लोग सिर्फ एक पादरी चाहते हैं जो उन्हें अच्छा महसूस करने और अच्छी बैठकें और अच्छे सामाजिक समारोह आयोजित करने में मदद करे। और यह उस प्रकार का पादरी नहीं है जिसकी पॉल कल्पना करता है कि तीमुथियुस होना चाहिए। एक और चिंता सार्वजनिक पूजा में औचित्य की है।

वह विशेषकर अध्याय 2 था। प्रार्थना। मंत्रालय के प्रति पुरुषों और महिलाओं का आचरण और दृष्टिकोण।

और फिर पादरी यह सुनिश्चित करते हैं कि महिलाओं को शिष्यत्व के लिए प्रोत्साहित किया जाए। महिलाओं को पुरुषों की तरह ही मोक्ष की आशा है क्योंकि वे शिष्य होने के माध्यम से और अच्छे शिष्यत्व के परिणामस्वरूप होने वाले वफादार जीवन और पवित्र आत्मा की शक्ति के माध्यम से

वफादार हो सकती हैं। यह वास्तव में एक अद्भुत अध्याय है जो केवल मनुष्यों के लिए ही नहीं, बल्कि परमेश्वर के सभी लोगों द्वारा परमेश्वर की आराधना के लिए अनुकूल है।

तीसरा, पादरी नेतृत्व में सत्यनिष्ठा और योग्यता। अध्याय 3 हमें ईश्वर की उच्च अपेक्षाओं और देखरेख करने वाले लोगों के लिए आवश्यक क्षमता की याद दिलाता है। कभी-कभी हम ऐसे लोगों को मंत्रालय की आकांक्षा रखते हुए देखते हैं जो इसके अलावा कुछ और नहीं कर सकते।

और शायद यह भगवान का निर्देश था और उन्होंने यह कोशिश की, वह कोशिश की और अंततः उन्हें एहसास हुआ कि भगवान मुझे इसके लिए बुला रहे हैं। लेकिन कभी-कभी ऐसे लोग भी होते हैं जो मंत्रालय की इच्छा रखते हैं और ऐसा इसलिए होता है क्योंकि यह एक अधिक सफेदपोश नौकरी है और वे वास्तव में काम नहीं करना चाहते हैं। और वे ऐसी स्थितियों में रहे हैं जहां वे कहते हैं, यह एक आरामदायक स्थिति है।

आपको पसीना नहीं बहाना पड़ेगा. आपको खोदने की जरूरत नहीं है. आपको किसी निश्चित समय पर काम पर आने की जरूरत नहीं है।

और दुनिया में यह धारणा है कि मंत्री बनना बहुत अच्छी बात है। आपको सप्ताह में केवल एक सुबह काम करना होगा। लेकिन दुर्भाग्य से, इस रूढ़िवादिता में कुछ सच्चाई है।

कार्य नीति पर मेरे अनुभाग में अपनी टिप्पणी में, मैं इस समस्या के बारे में बात करता हूं जिसे पादरी कभी-कभी सुदृढ़ करते हैं: आलस्य। और कुछ पादरी भी छात्रों के प्रति उतने अच्छे नहीं हैं। जब वे प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे तो वे उतने अच्छे छात्र नहीं थे और वे वास्तव में मंत्रालय में छात्रों के रूप में विकसित नहीं हुए और यह विनाश का एक नुस्खा है।

क्योंकि यदि हम ईश्वर का अनुसरण नहीं कर रहे हैं और विश्वास में नहीं बढ़ रहे हैं, तो हम स्थिर हो जायेंगे। और यदि हम स्थिर होने लगते हैं, तो हम अपने आप को ईश्वर से दूर करने, कम उपलब्धि हासिल करने और ईश्वर के उस आशीर्वाद की पूर्णता का आनंद नहीं लेने के लिए तैयार हो जाते हैं जिसकी हमें उसके प्रति वफादार रहने के लिए आवश्यकता होती है। चौथा, प्रेरितिक कलीसियाई दृष्टि में मसीह की प्रधानता।

जब हम अध्याय 3 के अंत में पहुँचते हैं, तो पॉल चर्च के सत्य का स्तंभ और आधार होने की बात करता है। और यह चर्च का एक उच्च दृष्टिकोण है, लेकिन यह चर्च का एक उच्च दृष्टिकोण है जिसे एक अन्य फाउंडेशन द्वारा कायम रखा गया है। चर्च अपनी नींव नहीं है।

और जैसा कि मैं स्क्रीन पर कहता हूं, चर्च को अपना मुखिया नहीं बनना चाहिए। चर्च का मुखिया ईसा मसीह है। और अध्याय 3 के अंत में मसीह के बारे में उन छंदों को चर्च के एक महत्वपूर्ण स्थान के रूप में पुष्टि के करीब देखा जाना चाहिए।

यह महत्वपूर्ण है क्योंकि इस पर ईसा मसीह का कब्जा है। वह मुखिया है। और सदस्य उसके शरीर और दुनिया में उसके आंदोलन के एजेंट हैं।

हम पूरे अध्याय 4 में पादरियों के लिए प्राथमिकताएँ देखते हैं। और यह झूठी शिक्षा से दूर रहने और सच्ची शिक्षा की पुष्टि में उत्साही होने के बीच एक प्रकार का उतार-चढ़ाव है। चर्च के प्रत्येक सदस्य की गरिमा, सभी जनसांख्यिकी के फायदे और नुकसान और टिमोथी को समस्याओं और विशेष रूप से विधवाओं की चुनौती से कैसे निपटना चाहिए, इस पर अध्याय 5 के व्याख्यान में हमने बहुत कुछ बताया है। और फिर स्तुतिगान, न केवल अध्याय 6 में, बल्कि पूरी किताब में, पॉल ने तीमुथियुस को ईश्वर के दर्शन से रूबरू कराया जो उसकी समस्याओं को दूर कर देगा और जो उसे विश्वास और विश्वासयोग्यता में नवीनीकृत कर देगा।

इसलिए, मैं 1 तीमुथियुस 6 से इन शब्दों के साथ समाप्त करूंगा, मैं आपको आदेश देता हूँ कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने तक इस आदेश को बिना किसी दोष या दोष के मानें, जिसे भगवान अपने समय में पूरा करेंगे। भगवान, धन्य और एकमात्र शासक, राजाओं के राजा और भगवानों के भगवान, जो अकेले अमर हैं और जो अगम्य प्रकाश में रहते हैं, जिन्हें किसी ने नहीं देखा है या देख नहीं सकता है, उनके लिए सम्मान और शक्ति हमेशा बनी रहेगी। हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से। तथास्तु।

यह डॉ. रॉबर्ट डब्ल्यू. यारब्रॉ हैं, जो देहाती धर्मपत्रों, देहाती नेताओं और उनके अनुयायियों के लिए अपोस्टोलिक निर्देश, सत्र 7, 1 टिमोथी 6 पर अपने शिक्षण में हैं।